करनाल

जागरण सिटी

दैनिक जागरण पानीपत, शनिवार 15 अगस्त 2015

देशभक्ति

प्रबंध किए गए हैं।

...ये आजादी की कहानी कभी नहीं लगती पुरानी

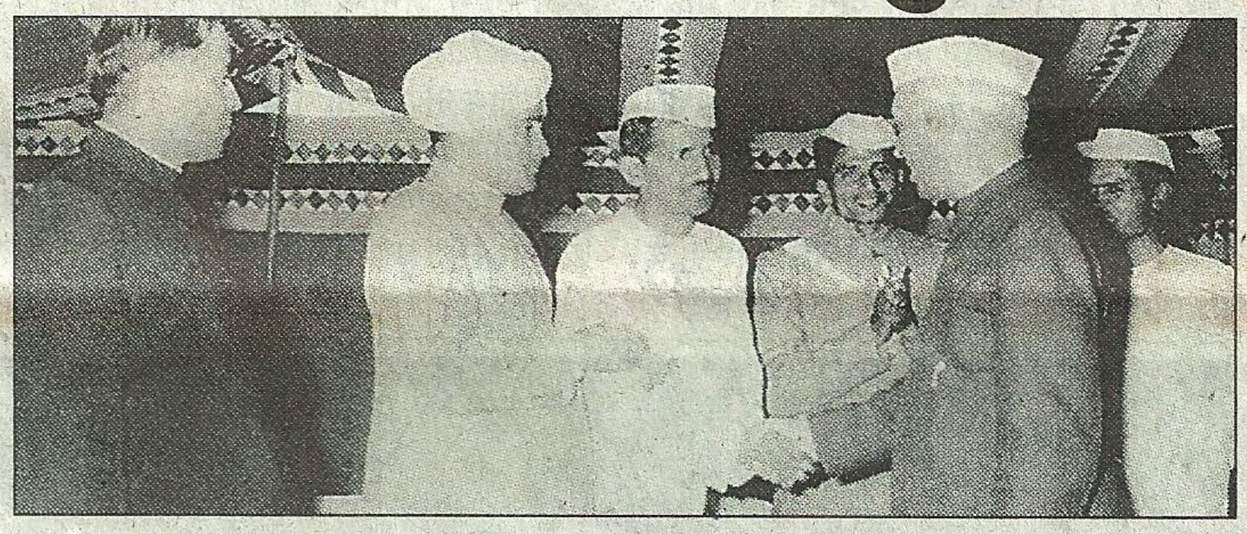

पं. जवाहर लाल नेहरू का अभिनंदन करते स्वतंत्रता सेनानी बाबू मूलचंद। फाइल फोटो।

अश्विनी शर्मा , करनाल

- स्वतंत्रता सेनानी के बेटे ने साझा की पिता से सुनी कहानी

ये आजादी की कहानी की गजब खूबी है। इसे जितनी बार भी सुना जाए, उतनी बार ही जोश व जज्बा पैदा करती है। स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने-अपने स्तर पर डटकर अंग्रेजों से लोहा लिया। असहनीय यातानाएं झेलने के बाद भी भारत मां को गुलामी के बेड़ियों से आजाद करवाने का संघर्ष जारी रखा। इसी का परिणाम रहा कि आखिरकार अंग्रेजों को हिंदुस्तान छोड़कर जाना पड़ा और आज सभी भारतवासी उन्हीं संघर्षों व बलिदान की वजह से स्वतंत्रता दिवस की सुबह मना रहे हैं।

आजादी के आंदोलन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के दिखाए पथ पर आगे बढ़ने वाले स्वतंत्रता सेनानी बाबू मूलचंद जैन के पुत्र अधिवक्ता अशोक जैन ने अपने पिता से सुनी आजादी की कहानी सांझा की। उन्होंने बताया कि कैसे उनके पिता ने आजादी के आंदोलन को आगे बढ़ाने में योगदान दिया। उनके पिता ने 1937 में लाहौर लॉ कालेज से कानून की शिक्षा हासिल की। 1937 के आखिरी में गोहाना में वकालत शुरू कर दी। 1938 में जिला रोहतक कांग्रेस ने निर्णय लिया कि वह आने वाले रोहतक जिला बोर्ड के चुनावों में भाग लेंगे। इसलिए देहातों में प्रचार का कार्य तेज कर दिया। कांग्रेस के इस कार्यक्रम से विरोधी पार्टी जिसे उस समय जमीदारा लीग कहते थे, उन्होंने कांग्रेस के उस देहाती प्रचार को रोकने की खूब कोशिश की। 1939 में असौदा गांव में जलसा रखा गया। यहां पर विरोधी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने उन पर हमला कर दिया। उन्हें लाठियों और तेजधार हथियारों से बुरी तरह मारा गया। इस घटना का शोर न केवल पंजाब विधानसभा में मचा, अपितु सारे हिंदुस्तान में जमीदारा लीग की इस करतूत के खिलाफ आवाज उठी। आखिर में जमीदारा लीग को झुकना पड़ा।

उनका घर गोहाना तहसील के स्वतंत्रता सेनानियों का अड्डा बन गया। साल के आखिर में गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह का आंदोलन शुरू कर दिया। दूसरा विश्व युद्ध जोरों पर चालू था। ऐसे अवसर पर सत्याग्रह चलाना गांधी जी का एक करिश्मा था।

गांधी जी अपने सत्याग्रह में शामिल होने के लिए उन्हीं कार्यकर्ताओं को आज्ञा देते थे, जो फार्म भरकर शपथ लेते थे कि वह नशा नहीं करता। खद्दर पहनता है। चरखा कातता है। सभी धर्मों को समान भाव से देखता है। बाबू जी ने भी फार्म भर दिया। फार्म की सिफारिश प्रदेश कांग्रेस कमेटी करती थी। गांधी जी उसे मंजूर करते थे। उनके फार्म की मंजूरी फरवरी 1941 में आई। पांच मार्च 1941 को गोहाना से पांच किलोमीटर दूर अपने गांव सिकन्दरपुर माजरा से सत्याग्रह किया। सत्याग्रह का भी बड़ा अजीब तरीका था। सत्याग्रह की तिथि व स्थान के बाबत जिला मैजिस्ट्रेट को सूचना दी जाती थी कि सत्याग्रही जलसे मे नारे लगाएगा के विश्व युद्ध में वह भर्ती नहीं होने देंगे।